दिनांक 23-8-2006 वार बुधवार

कविता

कुछ तो मुझे बड़ा होने दो।
तभी चांद पर जाऊंगा ।।
दूध भात की भरी कटोरी।
बुढ़िया को दे आऊंगा ।।
जाकर बोलूं चंदा से।
मेरे [illegible] मामा जी ।।
दूध भात तो देती हो।
देखो थोड़ी सी नानी ।।
दूध भात बुढ़िया को दूंगा।
खेलने को दूंगा नानी ।।
देख तब मेरी अम्मा बोलेगी।
लेकर आई पानी ।।
विद्यालय जाकर सब बच्चों को।
किस्सा बतलाऊंगा ।।
जो देखी दुनिया।
दुनिया चांद की सैर कराऊंगा ।।

[illegible]

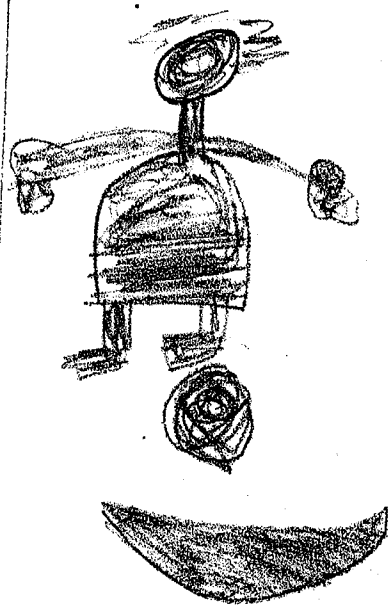

पहेली

मैं सरकी की बेटी
कमाई और बेलन
के बोलू लगी
तोड़ २ खाए गाय
कोई पीके जानकी

[illegible]

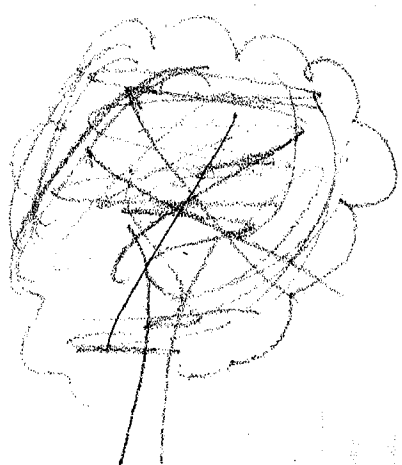

२५-८-2006

गुरुवार

कविता

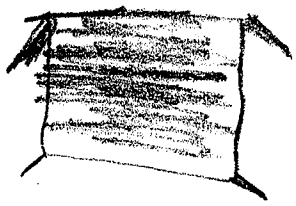

रोज सवेरे आता हुं।
और श्याम को जाता हुं।।
चलता रहता दिन भर।
पांव नही रखता धरती पर।।
तीन पंख का मै हु भाई।
याद करे जब आई गर्मी।।
उल्टा लटका रहता हु।
ठण्डी हवा लाता हुं।।
चार पांव पर चलना पांव।
बिना हिलाये हिलना पांव।।
मै देती सबको आराम।
बोलो क्या मेरा नाम।।

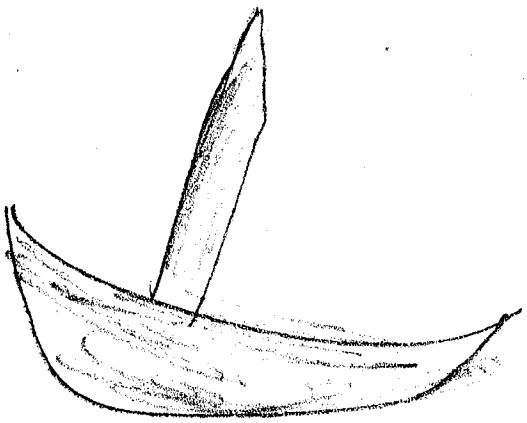

चित्र

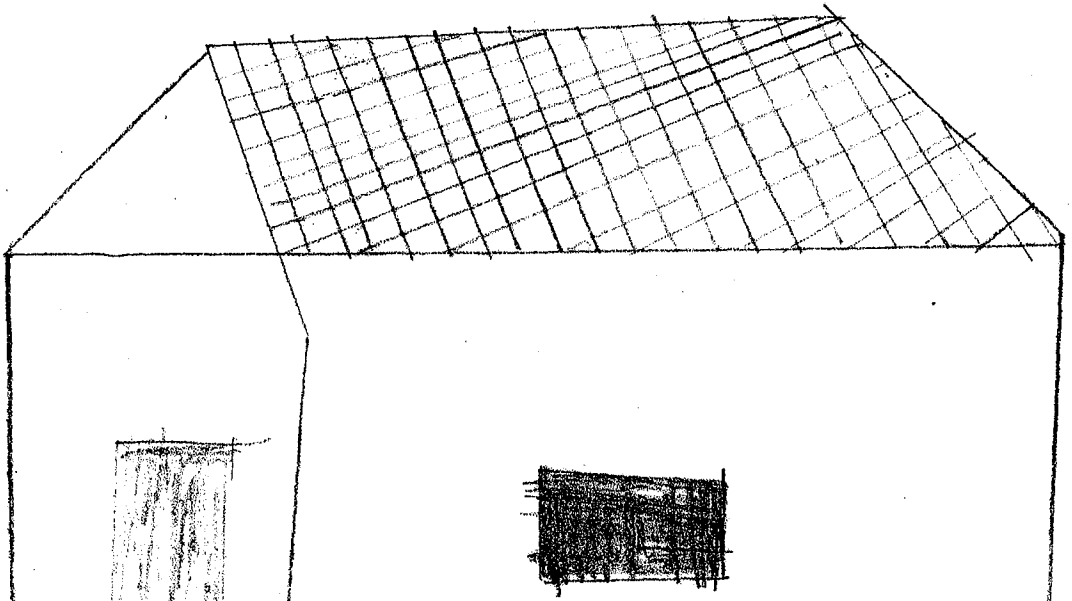

दिनांक 22-8-2006 वार मंगलवार

कविता

झण्डा हमारा झण्डा हमारा।
तीन रंग का झण्डा हमारा।
नीले गगन मे लहराता।
झण्डा हमारा झण्डा हमारा।

सबको लगता ये प्यारा।
तीन रंग का झण्डा हमारा।

26 जनवरी 15 अगस्त आते है
सभी गांव मे सभी स्कूलो मे झण्डा फहराते है।
सबसे प्यारा मेरा प्यारा।
तीन रंग का झण्डा हमारा।

झण्डा हमारा झण्डा हमारा।
तीन रंग का झण्डा हमारा।
गांधी जीने हमारे देश को आजाद कराया।
तभी से नील गगन झण्डा हमारा लहराया।
झण्डा हमारा झण्डा हमारा।

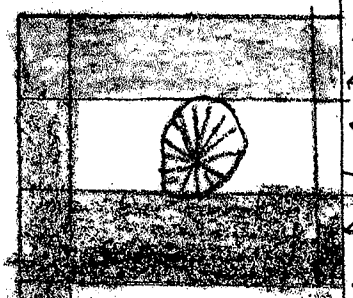

Purushottam

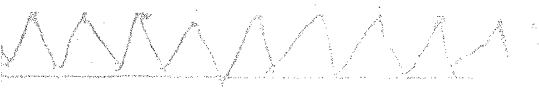

दिनांक 7-8-2006 वार सोमवार

कहानी

एक गांव था। वंहा पे एक बुढा और बुढी रहते थे। उनके चार संतान थी। सारी नकी शादी करदी तो बुढे ने एक बुढी ~~से~~ से कहां की बुढी भैसो को चारा गिर कर आ। जैसे तैसे बुढी चारा गिर आगयी रोटी कर कर बुढे को खिलाथी और उसने भी खाली तो दुसरे दिन उसकी बेटी आई तो दुसरे दिन बुढा बोला चारा गिर कर आ तो उसकी बेटी बोली काका तुम जीजी को दबाप ते क्यों हो फिर बुढा चारा गिर आगया चुपचाप सो गया। फिर बेटी आई गो बेटी खालो बुढे ने रोटी खायी चल दिया तो आगे एक नदी आई तो बुढा बोला नदी सुख जा। नदी बोली नही सुखु गी। बुढे को रोस आया रोस लुढे सारी लाल सारा पानी सुख गया। बुढा आगे चला गया।

फिर उसको एक शेर मिला बोला शेर हट जाओ। शेर बोला तुझको खाउगा। हु sssss बुढा आगे बढ गया। फिर आगे उसे समुद्र मिला ~~सुमुद्र~~ मे डूब गया। और मर गया। फिर वरबोला गांव वालो ने हल्ला मचादिया फिर वह भी। उसने रोस्ते से चेल गये फिर आगे नदी के हेकि चल गया तो नदी सुख गयी और आगे चल गया फिर उसको शेर मि

शुक्रवार

दिनांक 31/8/2006

काहानी	पहेली
...ाथी राजा आजा। फल फुल खाजा। खेल तमासा करजा। हमको भी भी दीखा जा। हमको दीखायेगा बड़ा। मजा आयेगा और। फ...ायेगा बड़ा मजा। आयेगा आप को हम। फल फुल खीलायेगे। खीलायेगे आपको। बड़ा मजा आयेगा। आप मोटा होकर। जाना पेट फुलाकर। जाना	चार खणी जयाक जिके कपर को गालो गेलह आती गेलह जाती कामी लाग तो गालो। चाचार पाँन ऊपर चाचार पान नीचा।